Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

कबीर के राम

सविता
एम० ए० हिन्दी
यू० जी० सी० नेट परीक्षा **उत्तीर्ण**

वर्तमान समय मे भारतीय समाज विभिन्न धर्मो एवं सम्प्रदायों में विभाजित है। सभी धर्मो के लोग अपने - अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते है। आज भारतीय समाज का पतन इस कदर हो चुका है कि आज का नेता वर्ग चंद वोटो के लालच में आकर समाज में साम्प्रदायिक भावना का प्रसार कर दंगे करवाता है। किसी भी क्षेत्र में जिस धर्म या जाति के लोगो की संख्या ज्यादा होती है, उसी धर्म या जाति के व्यक्ति को वे अपना उम्मीदवार घोषित करते है। वर्तमान समय में धर्म की आड़ में निंदनीय कार्य हो रहे है, धर्म के नाम पर लोगों का धन लूटा जा रहा है, संकुचित विचारो को फैला कर साम्प्रदायिक दंगे करवाए जा रहे है, जबरन लोगो का धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा है। आज भारतीय समाज को एक ऐसे मार्ग पर चलने की आवश्यकता है, जिससे साम्प्रदायिक एकता को बढ़ावा मिले तथा बावरी मस्जिद - राम मन्दिर जैसे विवाद समाप्त हो जाए। ऐसे समय में भक्तिकाल के कवि कबीर का भक्तिमार्ग याद आता है, जिसके द्वारा इन सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है और वह है - कबीर के राम का अनुसरण।

कबीर के राम पुराण प्रतिपादित अवतारी राम नही है। अवतारी राम कबीर को पसंद नही थे। अवतारवाद और कबीर के विचारों में कोई सामंजस्य नही है। कबीर के राम बुनियादी रूप से तुलसी के राम से भिन्न है। वह स्पष्ट रूप से कहते है -

''नां दशरथ धरि औतरि आवां।
नं लंका का रावं सतावां॥''

और,

''कहै कबीर विचार करि, ये ऊले व्यवहार।
याही थे जे अगम है, सो वरति रह्या संसार॥''

कबीर के राम तो अगम है और संसार के कण - कण में विराजते है। कबीर के राम इस्लाम के एकेश्वरवादी एकसत्तावादी खुदा भी नहींहै। इस्लाम मे खुदा या अल्लाह को समस्त जगत व जीवों से भिन्न एवं परम समर्थ माना जाता है, परन्तु कबीर के राम परम समर्थ भले ही हो, लेकिन समस्त जीवों और जगत से भिन्न तो कदापि भी नही है। बल्कि इसके विपरीत वे तो सबमें व्याप्त रहने वाले 'रमता राम' है। वह कहते है -

''व्यापक ब्रह्मा सबनि मैं एकै, को पंडित को जोगी।
रावण - राव कवनसूं कवन वेद को रोगी॥''

कबीर राम की किसी खास रूपाकृति की कल्पना नही करते, क्योंकि रूपाकृति की कल्पना करते ही राम किसी खासढाँचे में बंध जाते, जो कबीर को किसी भी हालत मे मंजूर नही। कबीर राम की अवधारणा को एक भिन्न और व्यापक रूप देना चाहते थे। किंतु इसके बावजूद कबीर राम के साथ एक व्यक्तिगत पारिवारिक किस्म का सम्बंध जरूर स्थापित करते है। राम के साथ उनका प्रेम उनकी अलौकिक और महिमाशाली सत्ता को एक क्षण भी भूलाए बगैर सहज प्रेमपरक मानवीय संबंधो के धरातल पर प्रतिष्ठित है।

कबीर नाम में विश्वास रखते थे, रूपमें नही। हॉलाकि भक्ति - संवेदना के सिद्धांतो में यह बात सामान्य रूप में प्रतिष्ठित है कि 'नाम रूप से बढकर है', लेकिन कबीर ने इस सिद्धांत का क्रांतिधर्मी उपयोग किया। कबीर ने राम- नाम के साथ लोक - मानस में शताब्दियों से रचे बसे संश्लिष्ट भावों को उदात्त एवं व्यापक स्वरूप देकर उसे पुराण प्रतिपादित ब्राह्मणवादी विचारधारा के खाँचे में बाँधे जाने से रोकने की कोशिश की।

कबीर के राम - नाम की घट - घट व्यापी अवधारणा लाख षडयंत्रो और कुचेष्टाओ के बावजूद आज भी लोकमानस में जीवित है और आगे भी रहने वाली है। कबीर के लिए राम का वेद - पुराण सम्मत होना जरूरी नही है। यह अलग बात है कि बहुत से सगुण कवियो व विद्वानो ने कबीर के राम को वेद - पुराण प्रतिपादित अवधारणा के दायरे में समेट लेने की बेहद कोशिश की है, लेकिन हैरानी और सुखद आश्चर्य की बात यह है किवे लोग भी जो वेदों और पुराणो की प्रमाणिकता में विश्वास नही रखते, कबीर के 'रमता राम' की अवधारणा से न सिर्फ सहमत होते है, बल्कि उसे आत्मसात् भी करते है।

कबीर ने अपनी राम - विषयक अवधारणा को लेकर कोई मतांधता नही दिखाई और इस विषय में न कोई अडियल रूख अपनाया। अवतारवाद से संबंधित अवधारणाओं का विरोध करने के बावजूद भी कबीर अवतारो के उन लीला-प्रसंगो को मुग्ध-भाव से स्वीकार करते है, जिनमें प्रेम एवं ईश्वर की सर्वव्यापकता का मार्मिक चित्रण हुआ है। कबीर राम के पर्यायवाची के रूपमें उन बहुत से नामो का भीप्रयोग करते है, जो पुराण परम्परा और विभिन्न सम्प्रदाय - मजहबों में ईश्वर के लिए प्रयुक्त किए जाते है, परन्तु ऐसा करते समय ईश्वर के प्रति उनकी धारणा में कोई अतंर नही आया।

कबीर के राम निर्गुण - सगुण के भेद से परे है। कबीर ने अपने राम को शास्त्र प्रतिपादित अवतारी, सगुण वर्चस्वशील वर्णाश्रम व्यवस्था के संरक्षक राम से अलग करने के लिए ही 'निर्गुण राम' शब्द का प्रयोग किया। कबीर को अवतारी राम से परेशानी नही है। कबीर को परेशानी है, अवतारी राम के साथ जुडी उस पुराण प्रतिपादित अवधारणा से, जिसके अनुसार राम वर्णाश्रम व्यवस्था रूपी धर्म की रक्षा करने और उस व्यवस्था की 'मर्यादा' को न मानने वालो को दंडित करने के लिए अवतार ग्रहण करते है। धर्म की पुराण - प्रतिपादित अवधारणा वर्णाश्रम व्यवस्था का ही पर्यायवाची है और कबीर इस वर्णाश्रम व्यवस्था के धोरतम विरोधी है। वह वर्णाश्रम व्यवस्था कबीर को कतई मान्य नही है, जिसमें किसी व्यक्ति को सिर्फ इसलिए अछूत और पशु से भी हीन मान लिया जाता हो तथा ज्ञान एवं भक्ति के अयोग्य ठहरा दिया जाता हो, क्योंकि वह किसी विशेष जाति में पैदा हुआ है। कबीर का उस वर्ण - व्यवस्था के प्रति गहरा विरोध है, जिसमे बहुजन समाज के व्यक्तियों को शताब्दियो से पीढी-दर-पीढी दंडित किया जा रहा हो और उन्हे इस दंड के कारण का पता तक नही हो। 'कबीर के नस- नसमें इस अकारण दंड के प्रति विद्रोह का भाव भरा था'। कबीर कैसे स्वीकार कर सकते थे कि उन्ही के समान एक दलित शंबूक को सिर्फ इस अपराध के लिऐ कि वह शूद्र होते हुए भी आत्म - साक्षात्कार पाने की अनधिकारिक चेष्टा कर रहा था, जिस राम ने मृत्युदंड दे दिया था, वह ईश्वर के अवतार है, खुद परब्रह्मा है।

कबीर की संवेदना में जिस ईश्वर की कल्पना और अनुभूति व्याप्त है, वह ईश्वर तो न केवल सबको एक समान मानता है, बल्कि सभी में एक समान भाव से व्याप्त भी है। उनकी संवेदना में बसे राम तो 'बाहर - भीतर सकल निरंतर' है। ब्राह्मणवादी वर्चस्वशील व्यवस्था के स्वार्थो एवं हितो के अनुरूप ढाले गए, पुराण प्रतिपादित अवतारी राम भला कबीर की विराट मानवीय संवेदना के धरातल पर कैसे प्रतिष्ठित हो सकते थे। 'रमता राम' की, आरव्यानो के बाहर के राम की, निर्गुण राम की भक्ति कबीर ने की थी। कबीर के राम को हर कोई अपनी भावना व कल्पना के अनुसार आत्मसात् कर उसकी सहज भक्ति कर सकता था। कबीर ने कहा है -

''जहाँ - जहाँ डोलो सोई परिक्रमा, जो कुछ करों सासेवा।
जब सोवो तब करो दंडवत, पूजों और न देवा।''

कबीर ने बिना किसी से मंदिर में जाने का अधिकार माँगे, सबको राम सुलभ करा दिया। कबीर ने राम का लोकतंत्रीकरण कर दिया था, जिसके परिणामस्वरूप चमार, जुलाहे और अछूत भी राम को पूज सकते थे।

१) कबीर के राम का विराट रूप-

कबीर ने राम शब्द का प्रयोग परमार्थ के लिए, ईश्वर के लिए, परम-चैतन्य के लिए किया है। कबीर का राम सर्वथा शंकर वेदांत के निर्गुण ब्रह्मा के समान नही है। कबीर का राम तो विश्व से अतीत है और विश्व मे व्याप्त भी है। वह विश्वोत्तीर्ण और विश्वमय भी है। वह घट - घट मे व्याप्त अवर्ण है, किन्तु सभी वर्ण उसी के है। वह अरूप है, किन्तु सभी रूप उसी के है। वह देश व काल से परे है। उसका न आदि है न अंत। कबीर का राम तो विश्व से परे भी है और

विश्व में व्याप्त भी। कबीर का राम अज्ञानोपहित नही है तथापि उसकी उपासना की जा सकती है। यद्यपि वह अरूप है, निराकार है, निर्विशेष है तथापि भक्ति उसमें एकमेक होकर मिल जाती है। वह अरूप, अलख होते हुए भी भक्त से सम्पर्क स्थापित करता है। वह अरूप प्रत्येक रूप में, प्रत्येक आकार में, प्रत्येक शरीर में रम रहा है। वह सभी के भीतर 'सहज' रूपमें प्रतिष्ठित है। वह भावाभाव विनिर्मुक्त है, किंतु प्रेम द्वारा सहज ही उससे मिलन हो सकता है।

२) कबीर के राम असीम, अगम एवं अगोचर -

कबीर ने अपने राम को हरि, गोविंद, खुदा आदि प्रचलित नामो से पुकारा। कबीर ने इन प्रचलित शब्दों को व्यापक ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त किया है, पौराणिक अवतार के अर्थ में नही। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है -

''दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना॥''

कबीर के राम दशरथ सुत नही थे, न ही लंका के राजा का नाश करने वाले थे और न ही देवकी की कोख से पैदा हुए थे, न ही यशोदा ने उन्हे गोद मे खिलाया था, न ही उन्होंने गोवर्धन पर्वत को धारण किया था। उनके राम एक विशिष्ट शरीर में नही, विश्वभर में व्याप्त है। वह ससीम नही, असीम है। कबीर ने आत्मा व राम को एक मानते हुऐ कहा है -

''आतम राम अबर नही दूजा''

३) कबीर के निर्गुण राम-

कबीर का निर्गुण शब्द से आशय है कि ईश्वर को नाम, रूप, गुण, आदि की सीमाओं में नही बाँधा जा सकता, क्योकि ईश्वर इन सभी सीमाओं से परे सर्वत्र है। कबीर के निर्गुण राम अज्ञेय है, उसकी गति लक्षित नही की जा सकती। चारों वेद, स्मृतियाँ, पुराण, व्याकरण आदि कोई भी उसका मर्म नही जानते। निर्गुण राम की इन्ही विशेषताओं का वर्णन करते हुए कबीर कहते है -

''निर्गुण राम जपहु रे भाई।
अविगत की गति लखी न जाई॥
चारि वेद जाके सुमृत पुराना, नौ व्याकरणांभरण न जाना॥''

कबीर का निर्गुण राम माया रहित है, न वह जन्म लेता है, न ही विनष्ट होता है। न उसकी कोई रूप रेखा है, न उसका कोई वर्ण है।उस निर्भय निराकार अलख निरंजन को कोई ठीक से नही जानता। कबीर का राम वर्ण - अवर्ण से मुक्त, अतंरहित, सृष्टि व लय से परे एवं अकथ्य है। कबीर निर्गुण राम का वर्णन करते हुए कहते है -

''अलख निरजंन लखै न कोई,
निरभै निराकार है सोई।
कारन अबरन कथ्यौ नहिं जाई,
सकल अतीत घट रहौ समाई॥''

कबीर के राम आवागमन के चक्कर से मुक्त है। उनका न कोई माता - पिता है, न कोई भाई - बंधु है। उनका कोई आचार व्यवहार भी नही है। उन्मत अवस्था में पहुँचकर कोई भी उन्हे प्राप्त कर सकता है। किसी को भी उनके आदि तथा मध्य अवसान का पता नही है। जब पृथ्वी पर न पानी था, न पवन था, न सृष्टि उत्पन्न हुई थी, न पिंड था, न धरती थी, न आकाश था, न कोई प्राणी था, तब भी निर्गुण राम गम्य तथा अगम्य दोनो स्थितियों से दूर थे।कबीर के निर्गुण राम तो सत्व, रज व तमस तीनो गुणो से परे है। कबीर के अनुसार जिस तरह नैनो के दुख को वाणी जानती है और वाणी के दुख को श्रवण समझते है, पिंड के दुख को प्राण समझते है और प्राण के दुख को मृत्यु जानती है, उसी प्रकार भक्त के दुख को वो राम भली-भाँति जानते है, जो तीनो लोको में व्याप्त होने पर भी अजन्मा है, सर्वगुण होते हुए भी गुणातीत है। कबीर के राम कालातीत और सब आयामो से मुक्त तथा स्वयं में अखण्ड है। कबीर उपने निर्गुण राम को कभी तो माधुर्य भाव से प्रेमी या पति मान लेते है, कभी दास्य भाव से अपना स्वामी और कभी कभी तो निर्गुण राम को वात्सल्य मूर्ति के रूप माँ एवं खुद को उनका पुत्र मान लेते है। निर्गुण - निराकार ईश्वर के साथ इस तरह का सरस, सहज व मानवीय प्रेमपरक सम्बंध ही कबीर की भक्ति की विलक्षणता है। यह दुविधा और

समस्या दूसरो को भले ही हो सकती है कि जिस राम के साथ कबीर इतने मानवीय प्रेम परक संबंध रखते है, वह निर्गुण कैसे हो सकते है, परन्तु खुद कबीर के लिए यह कोई समस्या नही। कबीर तो कहते है -

''संतो धोखा कासूं कहिये।
गुन मे निरगुन, निरगुन मे गुन, बाट छाडि क्यूबहिसे।''

४) अवतारवाद समर्थक नामों का प्रयोग :-

कबीर ने अपने राम को हरि, गोविंद, केशव, माधव, नरसिंह, खुदा, अल्लाह, साहब, करीम, रब, रहीम, विष्णु, गोरख, महादेव, नारायण, सारंग, आदि अवतारवाद समर्थक नामों से पुकारा। परन्तु ऐसा कबीर ने भक्ति के प्रवाह में होकर किया। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी इस विषय को सपष्ट करते हुए कहते है - ''उनका अल्लाह अलख निरजंन देव है, जो सेवा से परे है। उनका विष्णु वह है जो संसार रूप में विस्तृत है। उनका कृष्ण वह है जिसने संसार का निर्माण किया है। उनका गोविन्द वह है जिसने ब्रह्माण्ड को धारण किया है। उनका राम वह है जो सनातन तत्व है। उनका खुदा वह है जो दस दरवाजो को खोल देता है। रब वह है जो चौरासी लाख योनियो का परवर दिगार है। करीम वह है जो इतना सब कर रहा है। गोरख वह है जो ज्ञान से गम्य है। महादेव वह है जो मन को जानता है। सिद्ध वह है जो इस चराचर जगत का साधक है।'' कबीर ने इन अवतारवाद समर्थक नामो का प्रयोग ईश्वर के व्यापक व घट - घट मे व्याप्त स्वरूप की व्याख्या करने के लिए किया।

५) राम नाम संबंधी शंकाओ का निवारण :-

कबीर ने राम नाम संबंधी शंकाओ का निवारण करते हुए कहा कि उनके राम दशरथ के पुत्र नही है, उनके राम तो एक भाव से हर जगह तथा सभी में व्याप्त है। चाहे पंडित हो या योगी, राजा हो या प्रजा, वैद्य हो या रोगी, कबीर के राम सभी में निवास करते है। कबीर ने घट-घट में व्याप्त निराकार राम में अपना विश्वास व्यक्त किया है।

निष्कर्ष :- कबीर ने निर्गुण राम की भक्ति पर बल दिया, परन्तु उन्होंने राम का कोई रूप निर्धारित नही किया। कबीर ने ऐसा अद्वैतवाद दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसे हिंदूओ तथा मुसलमानो दोनो ने स्वीकार किया। कबीर ने राम और रहीम दोनो को मंदिर तथा मस्जिद के सीमित दायरे से बाहर निकालकर जन - जन से जोड दिया। कबीर का निर्गुण राम हिन्दूओ तथा मुसलमानो के लिए एक समान बन गया। कबीर ने एक ऐसे ईश्वर का निरूपण किया, जो केवल हिन्दूओ - मुसलमानो द्वारा ही नही बल्कि सभी धर्मो के अनुयायियों द्वारा स्वीकृत किया गया। कबीर ईश्वर की व्याख्या करते हुए कहते है -

''जोगी गोरख गोरख करै,
हिंदू राम राम उच्चारै।
मुसलमान कहै एक खुदाई,
कबीर का स्वामी घटि - घटि रहयौ समाई॥''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी

कबीर की विचारधारा - गोविन्द त्रिगुणायत

कबीर - दर्शन - राम जी लाल

कबीर साहित्य की परख - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

कबीर : एक नयी दृष्टि - डॉ० रघुवंश